योगिता यादव: एक परिचय

शोर्धार्थी: सरिता

जयोति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर (हिंदी विभाग)

निर्देशिका : डॉ चित्रा

सार: योगिता यादव एक असाधारण लेखिका हैं। उनके कार्यों में सामाजिक, नैतिक मुद्दों और समाज में महिलाओं की स्थिति पर विशेष ध्यान दिया गया है। यह पत्र योगिता यादव प्रोफाइल के बारे में समीक्षा करता है और योगिता यादव के कार्यों और उपलब्धियों के बारे में एक संक्षिप्त परिचय भी देता है।

1. परिचय :

योगिता यादव का जन्म 18 जून1981 को दिल्ली में हुआ। पढ़ाई लिखाई भी दिल्ली में ही हुई। पर जिस तरह कहा जाता है कि बच्चे की प्रथम गुरू उसकी मां होती है, उसी तरह साहित्य से पहला परिचय योगिता यादव को उनकी माता जी श्रीमती शीला यादव ने करवाया। वे अपनी बचपन की कहानियों, कथाओं, दोहों और छंद को अपने बच्चों को भी सुनाया करती थी। घर में लोक कथाओं और लोकोक्तियों भरा माहौल रहा। कभी डांट भी पड़ती तो मुहावरे साथ होते। घर के इस माहौल ने लोक और साहित्य के प्रति एक स्वभाविक लगाव योगिता यादव के मन मे पैदा हुआ, कि जैसे यह उनके रोजमर्रा के जीवन का ही हिस्सा हो। यहीं से भाषा पर अधिकार और साहित्य रचना के लिए जमीन तैयार हो रही थी।] 1[

स्कूल में भी भाषा पर अधिकार और साहित्यिक अभिरूचि के चलते शिक्षकों की खूब सराहना मिली और कई प्रतियोगिताएं भी जीतीं। पठन पाठन के प्रति रूचि सिर्फ साहित्यिक पुस्तकों तक ही सीमित नहीं थी बल्कि उन्हें विविध विषयों को पढ़ने का शौक रहा है। जिनमें सामाजिक और राजनीतिक विषयों पर केंद्रित पुस्तकें भी शामिल रहीं। यही वजह थी कि जब कॉलेज में दाखिले की

बारी आई तो उन्होंने राजनीितक शास्त्र विषय चुना और इसमें ऑनर्स किया (बीए ऑनर्स राजनीतिि शास्त्र)! यहां भी शिक्षकों का स्नेह और मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। अंतर्राष्ट्रीय संबंध पढाने वाले अपने प्राध्यापक डॉ सुशील दत्त की सलाह पर उन्होंने पत्रकारिता में भविष्य बनाने का मन बनाया और इसके लिए दिल्ली के क्नॉट प्लेस स्थित वाईएमसीए (Young Man Christian Association) पत्रकारिता संस्थान में दाखिला लिया और ए ग्रेड के साथ पढ़ाई पूरी। पढ़ाई के साथ ही नवभारत टाइम्स और दैनिक हिंदुस्तान जैसे प्रतिष्ठित समाचार पत्रों के लिए लिखने का भी मौका मिलने लगा । जिसका परिणाम यह हुआ कि पत्रकारिता की पढाई पूरी होते ही देश के प्रमुख समाचार पत्रों में से एक दैनिक भास्कर के साथ काम करने का अवसर मिला। यहां से एक पत्रकार के रूप में उनके जीवन में नए अनुभव शामिल होने लगे। यह अक्टूबर 2003 का समय था जब राष्ट्रीय समाचार पत्र अमर उजाला की जम्मू यूनिट में काम करने का प्रस्ताव उन्हें मिला। जम्मू को अभी तक अहिंदी भाषी क्षेत्र माना जाता है पर यहां की साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं की सक्रियता उल्लेखन्नीय है। इन लोगों के बीच जब उन्होंने काम किया तो जैसे साहित्य के प्रति रुझान फिर से बढने लगा। वर्ष 2004में जब जम्मू से मुजफ्फराबाद के लिए कारवां-ए-अमन बस की शुरुआत हुई तब उन्होंने बंटवारे और कबायली हमले में मीरपुर, कोटली और मुजफ्फराबाद से उजड़ कर आए लोगों के दुख दर्द को समेटते हुए सिलसिलेवार कई स्टोरीज कीं। पर यह अनुभव इतना प्रगाढ़ और गहरा था कि संवेदनाएं पूरी तरह अखबारी कॉलम में सिमट नहीं पायी। और तब योगिता यादव ने किसी मंच पर अपनी पहली साहित्यिक रचना प्रस्तुत की। 'इन दिनों' शीर्षक से यह कविता जम्मू-कश्मीर कला, संस्कृति एवं भाषा अकादमी के मंच पर पढ़ी गई, जिसे लोगों ने खूब सराहा। लगातार कुछ वर्ष कविताएं लिखने के बाद लेखनी ने कहानियों का रुख किया।]1[

2. लेखन और उपलब्धि

पहली कहानी 'बोनसाई' मध्य प्रदेश की साहित्यिक पत्रिका 'प्रगतिशील वसुधा' में प्रकाशित हुई। इसके बाद नया ज्ञानोदय, हंस, जनसत्ता, पर्वत राग, शीराजा, पुनर्नवा, दैनिक जागरण सहित कई पत्र तरह इस और हुईं प्रकाशित हानियांक उनकी में पत्रिकाओं-'क्लीन चिट' के रूप में भारतीय ज्ञानपीठ से वर्ष भारतीय को संग्रह कहानी इस हुआ। प्रकाशित संग्रह कहानी पहला उनका में 2014 गया। किया प्रदान भी कारपुरस् नवलेखन आठवां का ज्ञानपीठ हिंदी साहित्य जगत ने इस नई दस्तक का खुले मन से स्वागत किया। संपादकों ने स्वयं मांग कर रचनाएं अपनी पत्रिका और वेब पत्रिकाओं में प्रकाशित कीं। किसी भी रचनाकार के लिए यह बेहद सम्मान की बात है।] 2[

पत्रकारिता और साहित्यिक रचनाओं के साथ ही अध्ययन भी जारी रहा और उन्होंने राजनीतिक शास्त्र और हिंदी में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की। इसी बीच भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय से उन्हें जूनियर फैलोशिप भी मिली। इसके साथ ही रेडियो और दूरदर्शन के लिए भी वे कार्यक्रम करती रहीं।

वर्ष प्रदान कारपुरस् कलमकार द्वतीयि को चदरिया रे बिनी झीनी झीनी कहानी उनकी में 2015 कविता उनकी दौरान इस गया। कियाएं भी राष्ट्रीय स्तर की पित्रकाओंमें प्रकाशित होती रहीं। ऐसी ही एक कविता दिल्ली शीर्षक से हंस के वर्ष आई में अंक जनवरी के 2008, जिसे दिल्ली पर लिखी गई अब तक की श्रेष्ठ कविताओं में गिना गया। इससे पहले के मूजम् का में यनेपथ् कहानी उनकी में 2007 रंगसमूह पंचम थियेटर ग्रुप ने इसी नाम से नाट्य रूपांतरण भी प्रस्तुत किया। उनकी आई में 2016 गया। किया प्रदान मानसम् कथा हंस यादव राजेंद्र का वर्ष उस को बाहर भीतर के राजधानी कहानी इतन की कहानी इस दिया। कर तापुख् भी और को उपस्थिति उनकी में यसाहित् कथा जिसनेी प्रशंसा हुई कि पाठकों और आलोचकों ने इसमें मौजूद औपन्यासिकता के चलते इसकी कथा प्रवाह को और आगे बढ़ाने की मांग की। यह आह्लाद मिश्रित दबाव था, जिसे संभालने के लिए बहुत ही संयम और

प्रतिभा की जरूरत थी। जिसे उन्होंने बखूबी संभाला और वर्ष प्रक सामयिक में 2018ाशन से उनके पहले उपन्यास ख्वाहिशों के खांडववन का प्रकाशन हुआ। दिल्ली की मौलिक पहचान, उसकी अस्मिता और उसके सपनों के संरक्षण की मांग करता यह उपन्यास साहित्य बिरादरी में खूब सराहा गया। जिसे उसी वर्ष डॉ शिव कुमार मिश्र स्मृति सम्मान के लिए चुना गया।]2[

दिल्ली की मौलिक पहचान और पृष्ठभूमि पर लिखा गया यह अपनी तरह का अलग उपन्यास है। हालांकि योगिता यादव की अधिकांश कहानियां स्त्री विमर्श को केंद्र में रख कर लिखी गईं हैं पर इस उपन्यास को अगर स्त्री विमर्श तक ही सीमित कर दिया जाए तो यह अन्याय होगा । इस उपन्यास के माध्यम से पहली बार दिल्ली की क्षेत्रीय अस्मिता को हिंदी पट्टी यानी साहित्य के केंद्र में प्रस्तुत किया गया। वह दिल्ली जो अभी तक साहित्यिक कृतियों का विषय नहीं बन पायी थी। इसमें दिल्ली के मूल निवासियों, उसके गांवों का संघर्ष और सपने दोनों दिखाई देते हैं। यह लुटियंस की दिल्ली से अलग एक कच्ची, खूबसूरत और मौलिक दिल्ली की तस्वीर सामने रखता है। जिसकी कथा त्रिआयामी है, पहले के केंद्र में निम्न मध्यम वर्गीय परिवार की एक लड़की सुनीता है, दूसरे के केंद्र में दिल्ली के बदलते हुए गांवों का संघर्ष है तो तीसरे में वह जातीय और राजनीतिक व्यवस्था है जो दोनों की यातनाओं को बढ़ा रही है। भाषा का ऐसा ठेठ, मौलिक और मुहावरेदार लहजा भी इसे अपने समय के उपन्यासों से अलग एक खास जगह प्रदान करता है।] 2[

योगिता यादव की रचनाओं में स्त्री मनोविज्ञान का बेहद सूक्ष्म विश्लेषण मिलता है। अपनी पहली कृति 'क्लीन चिट' (कहानी संग्रह, वर्ष हिंदी होंनेउन् ही से (प्रकाशित से ज्ञानपीठ भारतीय में 2014 सामयिक में 2017 दौड़। की छपने न है हड़बड़ी की लिखने न हेंउन् दी। तकदस् मजबूत एक में यसाहित् उपन् पहले आए से प्रकाशनयास 'ख्वाहिशों के खांडववन' से एक बार फिर यह बात पुख्ता हुई। हिंदी साहित्य जगत ने भी उनकी रचनात्मकता का खुले मन से स्वागत किया। 'क्लीन चिट' पर भारतीय ज्ञानपीठ का नवलेखन पुरस्कार, कहानी 'झीनीचदरिया रे बिनी झीनी-' पर कलमकार पुरस्कार और कहानी 'राजधानी के भीतरबाहर-' पर वर्ष किया प्रदान मानसम् कथा हंस यादव राजेंद्र का 2016गया।

साहित्यिक लेखन के साथ वर्ष हैं। करती काम लगातार वे भी पर मुद्दों केंद्रित त्रीस् और सामाजिक साथ-
से प्रकाशन शिवना ही में 2017'आस्था की अर्थव्यवस्था' शीर्षक से उनका जम्मूक-श्मीर की
सामाजिक हेंउन् पर विषय इस है। चुका हो प्रकाशित संग्रह का लेखों आधारित पर कृतिसंस् आर्थिक-
है। चुकी मिल फैलोशिप जूनियर से मंत्रालय कृतिसंस् के सरकार भारत

रमणिका फाउंडेशन की ओर से प्रकाशित महत्वपूर्ण श्रृंखला 'हाशिए उलांघती औरत' के जम्मू-
मकश्ीर विशेषांक का सह संपादन और महाराष्ट्र से प्रकाशित पत्रिका 'सार्थक नव्या' के जम्मू-
] किया। ने यादव योगिता भी संपादन का विशेषांक मीरकश्[3

थायवस्अर्थव् की थाआस् किताब उनकी से प्रकाशन शिवना ही में 2018 प्रकाशित हुई जिसमें जम्मू के सांस्कृतिक एवं धार्मिक समाज का आर्थिक आधार पर विश्लेषण किया गया है। जम्मू की संस्कृति को जानने की इच्छा रखने वालों के लिए यह एक उल्लेखनीय किताब है।]4[

3. निष्कर्ष

योगिता यादव एक लेखिका हैं जो अपने विचारों से दूसरों को प्रेरित करने का गुण रखती हैं। उनके द्वारा सरल कहानियों में, वह समाज की प्रमुख समस्याओं को आसानी से व्यक्त करती है। समाज के प्रति उनके विचारों से प्रेरित होकर, मैंने योगिता यादव की कहानियों पर अपनी थीसिस बढ़ाने का फैसला किया।

4. संदर्भ

1. vukgn if=dk] ;ksfxrk ;kno] 7 vxLr 2013 dks iksLV fd;k x;k
2. mfeZyk 'kqDy] iqLrd leh{kk% ;ksfxrk ;kno dk miU;kl & [okfg'kksa ds [kkaMoou] 25&05&2020
3. lbZn valkjh] thou ls tqM+h lgt dgkfu;ka lesVrh gS ^Dyhu fpV^]vkt rd] 09 vDVwcj 2014
4. jfookjh; fo'ks"k% ;ksfxrk ;kno dh dgkuh] rkÅ th fdrus vPNs gSa] 29 uoacj] 2020